CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2024 - 8.029

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

[Conference Special-NTMAE-24]

शिक्षा में नैतिकता

विश्राम मीणा
शोधार्थी, महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
Email – vishram.meena815@gmail.com, Mobile - 9887434815

First draft received: 14.05.2024, Reviewed: 29.05.2024, Final proof received: 20.06.2024, Accepted: 27.06.2024

सारांश

प्रस्तुत प्रपत्र में शिक्षा में नैतिकता शीर्षक पर चर्चा की जायेगी। आज जीवन के सभी क्षेत्रों में नैतिकता का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा भी मानव जीवन की एक मूलभूत प्रक्रिया है। अतः शिक्षा में नैतिकता की अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रभावी भूमिका है। एक अच्छा इंसान बनने के लिए शिक्षा प्रणाली में नैतिकता को एक पाठ्यक्रम के रूप में रखा जाना चाहिए। इस पेपर में हम नैतिकता क्या है और शिक्षा क्या है? साथ ही हम शिक्षा में नैतिकता की महत्वपूर्ण भूमिका का निम्न बिन्दुओं के आधार पर अध्ययन करेंगे।

मुख्य शब्द: *शिक्षा, नैतिकता आदि.*

परिचय

हमारे वर्तमान युग में जीवन के सभी क्षेत्रों में नैतिकता का महत्वपूर्ण स्थान है। नैतिकता भी महत्वपूर्ण हो गई है।शिक्षा, क्योंकि शिक्षा मानव जीवन की एक मूलभूत प्रक्रिया है। अतः नैतिकता अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। शिक्षा। तकनीक के द्वारा हम सभी ज्ञान तक आसानी से पहुंच सकते हैं। शिक्षा में प्रौद्योगिकी के उपयोग से कुछ नैतिकता का पता चलता है साहित्यिक चोरी जैसी समस्याएँ। नैतिकता के महत्व को समझने के लिए नैतिकता को पाठ्यक्रम के रूप में रखा जाना चाहिए। इस मुद्दे पर चर्चा करने से पहले यह परिभाषित करना आवश्यक है कि नैतिकता क्या है और शिक्षा क्या है?

नैतिकता की अवधारणा

नीतिशास्त्र आज दर्शनशास्त्र की सबसे महत्वपूर्ण एवं क्रियाशील शाखा है। सामान्य तौर पर, नैतिकता नैतिक दर्शन है। एथिक्स शब्द ग्रीक शब्द एथोस से लिया गया है जिसका अर्थ है प्रथा, चरित्र। इसका संबंध हमारे से मूल्य और गुणों से सम्बंधित है। इसलिए, हमारे कार्य और रो?जमर्रा की जिंदगी में हमारे अनुभव नैतिकता के विषय हैं। हमारे पास अपनी पसंद के बारे में सोचने की क्षमता है, इसलिए हम अपने सभी निर्णयों और कार्यों के लिए जिम्मेदार हैं। इसके अतिरिक्त यह कहा जा सकता है कि नैतिकता इस बात का अध्ययन है कि क्या गलत है और क्या सही है। अच्छाई–बुराई, सही–गलत, गुण–अवगुण, न्याय और अन्याय कुछ नैतिक अवधारणाएँ हैं।

नैतिकता नैतिक सिद्धांतों का अध्ययन करती है। शिक्षा की दुनिया में एक केंद्रीय स्थान रखती है। यह मूल्यों को स्थापित करने, व्यवहार का मार्गदर्शन करने और जिम्मेदार नागरिकों के पोषण के लिए कार्य करती है।

शिक्षा की अवधारणा

शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण और सर्वव्यापी विषय है। यह मानव की एक विशेष उपलब्धि है। शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। इसी विकास के कारण मानव समस्त प्राणियों की मुफुटमाणि माना गया है। मानव शिक्षा द्वारा ही अपनी वाणी, विवेक, सामाजिकता, सृजनशीलता से विभूषित होता है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान व कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। यह कार्य मनुष्य के पैदा होने ही शुरू हो जाता है। उस समय वह बोलना, चलना, उठना बैठना कुछ भी नहीं जानता। वह एकदम असामाजिक होता है। परन्तु जैसे–जैसे वह बड़ा होता है वैसे–वैसे वह परिवार व समाज के सम्पर्क में आता है। जब वह कुछ बड़ा हो जाता है तो उसकी शिक्षा विद्यालय में सुनियोजित ढंग से प्रारम्भ होती है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समाज से भी बहुत कुछ सीखने को मिलता रहता है। सीखने–सिखाने का यह क्रम जीवनपर्यन्त विद्यालय छोड़ने के उपरान्त भी चलता रहता है।

शिक्षा में नैतिकता की भूमिका को परिभाषित करना

शिक्षा में नैतिकता की भूमिका सीखने के माहौल में नैतिक सिद्धांतों, मूल्यों और गुणों को प्रदान करने और उनका अभ्यास करने के इर्द–गिर्द घूमती है। इसमें न केवल एक विषय के रूप में नैतिकता पढ़ाना शामिल है बल्कि नैतिक व्यवहार, चरित्र और निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना भी शामिल है।

शिक्षा में नैतिकता का प्रभाव

शिक्षा में नैतिकता गहरा और दूरगामी प्रभाव डालती है, जो निम्न बिन्दुओं कं आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है –

- **नैतिक विकास :–** नैतिकता छात्रों में नैतिक विकास को बढ़ावा देती है, उन्हें सही और गलत के बीच अंतर करने में मार्गदर्शन करती है।
- **जिम्मेदार नागरिकता :–** यह नागरिक कर्तव्य और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना पैदा करके जिम्मेदार नागरिकता का पोषण करती है।
- **चरित्र निर्माण :–** नैतिकता चरित्र निर्माण में योगदान देती है, ईमानदारी, सहानुभूति और अखंडता जैसे गुणों पर जोर देती है।
- **संघर्ष समाधान :–** यह छात्रों को नैतिक निर्णय लेने के कौशल से लैस करता है, जो संघर्षों को सुलझाने में अमूल्य हैं।
- **आलोचनात्मक सोच :–** नैतिकता छात्रों को जटिल नैतिक मुद्दों की जांच करने के लिए प्रेरित करके आलोचनात्मक सोच को प्रोत्साहित करती है।
- **सामाजिक सद्भाव :–** यह विविधता और मतभेदों के प्रति सम्मान सिखाकर सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देता है।
- **भविष्य का नेतृत्व :–** नैतिक शिक्षा भविष्य के नेतृत्व का मार्ग प्रशस्त करती है जो न्याय और निष्पक्षता के सिद्धांतों पर आधारित है।

शिक्षा में नैतिकता की चुनौतियाँ

हालाँकि शिक्षा में नैतिकता की भूमिका महत्वपूर्ण है। लेकिन फिर भी शिक्षा में नैतिकता को स्थापित करने में निम्न चुनौतियों का सामना करना पड़ता है –

- ❖ **शिक्षक को नैतिकता हेतु तैयार करना :–** शिक्षकों को नैतिकता सिखाने और नैतिक चर्चाओं का मार्गदर्शन करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता हो सकती है।
- ❖ **पाठ्यचर्या एकीकरण :–** नैतिकता को अन्य विषयों और पाठ्यचर्या के साथ संरेखित करना जटिल हो सकता है।

- **मूल्यांकन :–** नैतिक विकास और नैतिक व्यवहार का आकलन करना एक चुनौतीपूर्ण प्रयास है।
- **नैतिक दुविधाएँ :–** संवेदनशील नैतिक विषयों पर चर्चा करने से कक्षा में नैतिक संघर्ष हो सकता है।

शिक्षा में नैतिकता का भविष्य

शिक्षा में नैतिकता की महत्वपूर्ध भूमिका होती है, जिसे निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है –

- **डिजिटल नैतिकता :–** जैसे–जैसे प्रौद्योगिकी आगे बढ़ती है, डिजिटल नैतिकता और जिम्मेदार ऑनलाइन व्यवहार सिखाना आवश्यक हो जाता है।
- **वैश्विक नागरिकता :–** नैतिकता वैश्विक स्तर पर नैतिक जिम्मेदारी पर जोर देकर वैश्विक नागरिकता को बढ़ावा देती है।
- **पर्यावरणीय नैतिकता :–** पर्यावरणीय मुद्दों को संबोधित करने के लिए पर्यावरणीय नैतिकता सिखाना महत्वपूर्ण है।
- **नैतिक नेतृत्व :–** दुनिया को नैतिक नेताओं की आवश्यकता है जो जटिल नैतिक मुद्दों को सुलझा सकें और सैद्धांतिक निर्णय ले सकें।

निष्कर्ष

नैतिक विकास और जिम्मेदार नागरिकता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा में नैतिकता की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह चरित्र विकास, संघर्ष समाधान और आलोचनात्मक सोच की नींव के रूप में कार्य करता है। शिक्षा में नैतिकता के महत्व को पहचानकर, हम छात्रों को नैतिक नेता बनने के लिए तैयार करते हैं जो 21वीं सदी की जटिल नैतिक चुनौतियों का समाधान कर सकते हैं। नैतिक शिक्षा सही–गलत की शिक्षा देने से कहीं आगे जाती हैय यह सामाजिक जिम्मेदारी की भावना और न्याय और निष्पक्षता के प्रति प्रतिबद्धता पैदा करता है। नैतिक दुविधाओं से भरी दुनिया में, यह जरूरी है कि नैतिकता हमारे शैक्षिक प्रयासों के मूल में रहे।

सन्दर्भ

1. मदान पूनम व पाण्डेय रामशक्ल ''समसामयिक भारत और शिक्षा'' अग्रवाल पब्लिकेशनस, आगरा, प्रथम संस्करण 2015–16, पृ.सं. 01
2. www.sciencedirect.com
3. डॉ. कड़वासरा जगदीश प्रसाद, डॉ. शर्मा हनुमान सहाय, डॉ. पाटनी उषा, ''समसामयिक भारत और शिक्षा'' अरिहंत शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं. 01
4. www.gurunitesh.blogspot.com
5. सक्सेना एन.आर. स्वरूप, कुमार संजय, ''शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत'', आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, प्रथम संस्करण, 2007, पृ.सं. 3,4